Dainik Bhaskar (Indore), 06th January 2026, Page – 02

City भास्कर

एआई सवाल भी है, समाधान भी/ पर डोर मानव हाथ में रहे/ तकनीक बढ़े, पर संवेदना/हर निर्णय के केंद्र में रहे।
- संतोष चौबे

विज्ञान पर कविताएं

आईआईटी में क्वांटम, इलेक्ट्रॉन और तकनीक पर सुनाई रचनाएं, देशभर से आए थे कवि

प्रदूषण देख संभल जाइए, AQI घटाने IQ लगाइए

सिटी रिपोर्टर • इंदौर

'पायथागोरस जीवन का आधार है,
संघर्ष से ऊंचाई मिलती है।
लंब-आधार से बनता कर्ण,
यही जीवन की सच्ची पढ़ाई।'

विज्ञान और जीवन को जोड़ती यह कविता कवि ओम यादव ने आईआईटी इंदौर द्वारा आयोजित दो दिनी राष्ट्रीय तकनीकी हिंदी संगोष्ठी 'अभ्युदय-3' के कवि सम्मेलन में प्रस्तुत की। सम्मेलन में देशभर से आए कवियों ने विज्ञान को जटिल विषय नहीं, बल्कि संवेदना और समाज से जुड़ा अनुभव बनाकर मंच पर रखा। कार्यक्रम में मोहन सागोरिया, बलराम उस्ताद, प्रदीप मिश्रा, पंकज प्रसून, राजेश कुमार, बीएल मीणा, तरुण भटनागर, संतोष चौबे सहित अन्य कवियों ने क्वांटम, एआई, इलेक्ट्रॉन, प्रदूषण, तकनीक, युद्ध, निजता और मानवीय रिश्तों जैसे विषयों को कविता, गीत व व्यंग्य से पेश किया। इससे पूर्व शुरुआत कबीर गायक पद्मश्री भैरू सिंह चौहान ने एक घूंघट के पट खोल,'मन लागो मारो यार फकीरी में, चदरिया झीनी रे झीनी' गाकर की।

विज्ञान पर कविता में भाव, कला के साथ तर्क भी होता है

मोहन सागोरिया ने सुनाया कि-
एक क्लिक में मिल जाता है सब कुछ,
पर एक क्लिक में जीवन नहीं खुलता।
हर क्लिक पर छिलती जाती निजता,
पर प्रेम अब भी अंगुलियों से दूर रहता।

पंकज प्रसून -
प्रदूषण चरम पर है, संभल जाइए,
AQI घटाने को IQ लगाइए।
बॉडी बनाने से पहले
एंटीबॉडी बनाइए।

बीएल मीणा -
अरे मानवता के गद्दार सुन,
हर नापाक हरकत का जवाब होगा। नया भारत चुप नहीं रहेगा,
घर में घुसकर हिसाब होगा।

प्रदीप मिश्रा -
धारा के विरुद्ध बहता इलेक्ट्रॉन,
संघर्ष में बदल जाता है प्रकाश।
सूरज ढल जाए भले,
धरती फिर भी जगमगा उठती खास।

राजेश कुमार -
न्यूटन, बोर और बोस के बीच,
हिंदी बस सहमी-सी रही।
विज्ञान भाषा से जुड़ेगा तब,
जब कविता उसकी सहचरी बनी।

तरुण भटनागर -
सूरजमुखी हर दिन सिखाता है,
चेहरा उजाले की ओर रखना।
पीठ अंधेरे में हो तब भी,
उम्मीद का सूरज न तकना।

क्लिष्ट विज्ञान की रसमय प्रस्तुति: कवि और लेखक पंकज प्रसून ने कहा कि विज्ञान पर कविता उसे सीरियस मोड से हटाने लिखते हैं। इसमें भाव और कला पक्ष के साथ तीसरा तर्क पक्ष भी होता है। जो कवि हैं वो वैज्ञानिक नहीं और जो वैज्ञानिक हैं वो कवि नहीं। क्लिष्ट विज्ञान को रसमय और सरल रूप में प्रस्तुत करते हैं।